महावीराष्टक-स्तोत्रम्

कविश्री भागचंद्र

(शिखरिणी छन्द)

यदीये चैतन्ये मुकुर इव भावाश्चिदचितः,
समं भान्ति ध्रौव्य-व्यय-जनि-लसन्तोऽन्तरहिताः।
जगत्साक्षी मार्ग-प्रकटनपरो भानुरिव यो,
महावीर-स्वामी नयन-पथ-गमी भवतु मे॥१॥

जिसप्रकार सम्मुख-समागत पदार्थ दर्पण में झलकते हैं, उसीप्रकार जिनके केवलज्ञान में समस्त जीवादि अनंत-पदार्थ, उत्पाद-व्यय-ध्रौव्य सहित युगपत् प्र. तिभासित होते रहते हैं। और जिसप्रकार सूर्य लौकिक मार्गों को प्रकाशित करता है, उसीप्रकार मोक्षमार्ग को प्रकाशित करनेवाले जो जगत् के ज्ञाता-दृष्टा हैं, वे भगवान् महावीर मेरे नयनपथगामी हों अर्थात मुझे दर्शन दें॥१॥

अताम्रं यच्चक्षुः कमल-युगलं स्पन्द-रहितम्,
जनान्कोपापायं प्रकटयति बाह्याभ्यन्तरमपि।
स्फुटं मूर्तिर्यस्य प्रशमितमयी वातिविमला,
महावीर-स्वामी नयन-पथ-गामी भवतु मे॥२॥

स्पंद अर्थात् टिमकार (पलक झपकना) और लालिमा से रहित जिनके दोनों नेत्रकमल मनुष्यों को बाह्य और आभ्यंतर क्रोधादि-विकारों का अभाव प्रगट कर रहे हैं और जिनकी मुद्रा स्पष्टरुप से पूर्ण-शांत और अत्यंत-निर्मल (विमल) है, वे भगवान् महावीर स्वामी मेरे नयनपथगामी बनें अर्थात् मुझे दर्शन दें।२।

नमन्नाकेन्द्राली-मुकुट-मणि-भा जाल-जटिलम्,
लसत्पादाम्भोज-द्वयमिह यदीयं तनुभृताम्।
भवज्ज्वाला-शान्त्यै प्रभवति जलं वा स्मृतमपि,
महावीर-स्वामी नयन-पथ-गामी भवतु मे॥३॥

नम्रीभूत इन्द्रों के समूह के मुकुटों की मणियों के प्रभाजाल से मिश्रित जिनके

विराट-ज्ञान रूपी जल से जगत् के जीवों को स्नान कराती रहती है तथा इस समय भी विद्वत्-जन रूपी हंसों को परिचित है, ऐसे महावीर स्वामी मेरे नयनपथगामी बनें अर्थात् मुझे दर्शन दें।

अनिर्वारोद्रेकस्त्रिभुवन-जयी काम-सुभटः,
कुमारावस्थायामपि निज-बलाद्येन विजितः।
स्फुरन्नित्यानन्द-प्रशम-पद-राज्याय स जिनः,
महावीर-स्वामी नयन-पथ-गामी भवतु मे॥७॥

जिसने अपने अनिर्वार-वेग से तीनों लोकों को जीत रखा है, ऐसे 'काम' रूपी सुभट (योद्धा) को अपने आत्म-बल से कुमारावस्था (बाल्यावस्था) में ही जीतकर नित्य आनंद-वर्षक मोक्षपद पर जो विराजित हैं, ऐसे भगवान् महावीर स्वामी मेरे नयनपथगामी हों अर्थात् मुझे दर्शन दें।

महामोहातंक-प्रशमन-पराकस्मिक-भिषक्,
निरापेक्षो बन्धुर्विदित-महिमा मंगलकरः।
शरण्यः साधूनां भव-भयभृतामुत्तमगुणो,
महावीर-स्वामी नयन-पथ-गामी भवतु मे॥८॥

आप महामोह रूपी रोग को शांत करने के लिए अनोखे वैद्य, जीवमात्र के निःस्वार्थ-बंधु हैं, जिनकी महिमा से सारा लोक परिचित है, जो महामंगल के करनेवाले हैं, तथा संसार से डरे सज्जन जीवों के शरणदाता, और उत्तम-गुणों के धारी भगवान् महावीर स्वामी मेरे नयन-पथ-गामी हों अर्थात् मुझे दर्शन दें।

(अनुष्टुप्)

महावीराष्टकं स्तोत्रं भक्त्या 'भागेन्दुना' कृतम्।
यः पठेच्छृणुयाच्चापि स याति परमां गतिम्॥

भक्तिपूर्वक कविवर भागचंद्र द्वारा रचित इस 'महावीराष्टक स्तोत्र' का जो पाठ करता है, व सुनता है; वह परम-गति (मोक्ष) को पाता है।

***